शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग़ज़ल : उत्पत्ति एवं विकास

उपासना दीक्षित (शोधार्थी)
कोटा विश्वविद्यालय
कोटा, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी, उर्दू में कहो या किसी भाषा में कहो
बात का दिल पे असर हो तो ग़ज़ल होती हैं

उर्दू और फारसी कविता का एक विशेष प्रकार ग़ज़ल कहलाता है। ग़ज़ल को स्वरावलियों का जामा पहनाकर व्यक्त किया हुआ ढंग ग़ज़ल गायिकी है। इसकी पैदाइश फारस के लोक संगीत से हुई और वहीं इसका प्रसार अरब, मिश्र और भारत में हुआ। ग़ज़ल भारत की मिट्टी में उगाया हुआ ईरानी पौधा है, जिसका बीजारोपण मुस्लिम काल में हुआ और जिसकी जड़े यहाँ की आबो-हवा में फलती-फूलती रही, ग़ज़ल को प्रतिष्ठा दिलाने में खिलजी तथा तुगलक साम्राज्य के राजकवि अमीर खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग़ज़ल की उत्पत्ति एवं विकास पर विचार किया गया है।

ग़ज़ल का सामान्य अर्थ एवं परिभाषाएँ

भारतीय संस्कृति देशी तथा विदेशी ताने-बाने से निर्मित बहुरंगी वस्त्र है। भारतीय संगीत का इतिहास ऐसी ही समन्वयकारी प्रवृत्तियों की विराट चेष्टा है। भारतीय संस्कृति के समान ही ललित कलाओं की भी यह प्रकृति है कि वे बाह्य कलाओं को शीघ्र ही आत्मसात कर लेती हैं। फिर चाहे गीत हो, वाद्य हो, नृत्य हो भारतीय इतिहास के मध्य काल से संगीत की प्रत्येक विधा हिन्दू - मुस्लिम सांमजस्य की प्रतीक है। इसी सांजस्य का एक रूप है ग़ज़ल गायिकी।"1

भारतीय काव्य जगत एवं संगीत जगत को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली रचना ग़ज़ल है। सामान्यतः ग़ज़ल को हुस्न, इश्क और जवानी का हाल बयान करने की अभिव्यक्ति का माध्यम कहा जाता रहा है।

ग़ज़ल का अर्थ 'कातने-बुनने' से भी लिया गया है। कहा जाता है कि ग़ज़ल शब्द की उत्पत्ति ग़ज़ाल शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'हरिण' ग़ज़ल मूलतः एक आत्मनिष्ठ या व्यक्तिपरक काव्य विधा है।"2

"ग़ज़ल मूलतः फारसी भाषा की काव्यगत शैली है तथा महोब्बत के जज़्बातो की अभिव्यक्ति है। महोब्बत का अर्थ केवल इंसानी प्रेम से ही नहीं है बल्कि सर्वशक्तिमान ईश्वर जो इस सृष्टि के पालनकर्ता है उनके प्रति असीम प्रेम भी है। यहाँ फारसी साहित्य की यह बात पुष्टि करती है, कि फारसी साहित्य में 'इश्के हकीकी।' आलौकिक प्रेम के नाम से जाना जाता है, वही 'इश्क़े मज़ाजी" को लौकिक प्रेम के नाम से जाना जाता है।

ग़ज़ल एक फारसी भाषा की काव्यगत शैली है जिसका प्रयोग लौकिक व पारलौकिक दोनों ही प्रेम को दर्शाने के लिए किया गया है।"3

"अरबी-फारसी की परम्पराओं को मान्यता देने वाले ग़ज़ल को 'सुरवन-बज़न' अर्थात् स्त्रियों के बारे में बात करना या आशिक माशूक की बातचीत मानते है। "ग़ज़ल प्रतिकूल व अनुकूल

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हर तरह के मानवीय अनुभवो की बारिकीयों को बहुत ही उम्दा तरीके से बयान करती है। ग़ज़ल एक ज़रिया है, जो जिन्दगी के हर रंग को बय़ां करती है। चाहे सुखःदुख हो या संयोग-वियोग।"4

अलग-अलग विद्धानों ने ग़ज़ल की परिभाषा निम्न प्रकार से दी है :

मिर्जा ग़ालिब ने ग़ज़ल के बारे में कहा था -

"मतलब है नाज ओ गंध वाले
गुफ्तगु मे काम चलता नहीं है
दश्न ओ खंजर कहे बगैर
हर चन्द हो मुशाहिद-ए-हक की
गुफ्तगु बनती नहीं है बाद सागर कहे बगैर"

अर्थात् ग़ज़ल को जवानी का हाल बयान करने वाली और माशूक की संगति व इश्क का जिक्र करने वाली अभिव्यक्ति कहा गया है।"5

महाकवि शंकर ने ग़ज़ल को "राजगीत" कहकर सम्बोधित किया है -

मशहूर शायर फिराक गोरखपुरी जी लिखते है -

"ग़ज़ल महबूब से बातचीत करने को कहते है"

बेहद ही सुंदर अंदाज में बशीर बद्र ने ग़ज़ल को परिभाषित किया है -

"ये शबनमी लहजा हे आहिस्ता ग़ज़ल पढ़ना
तितली की कहानी है फूलो की जुबानी है।"

यह शेर ग़ज़ल के नूर को बया कर रहा है।6

शरतचन्द्र पंराजपे जी के शब्दों में -

"ग़ज़ल मूलतः फारसी की काव्यगत शैली है इसमें प्रणय प्रधान गीतों का समावेश होता है।"

"गुलहा-ए-परीशाँ" में खुरर्शीद नवी "अब्बासी ने कहा है कि ग़ज़ल उर्दू शायरी का ही एक रूप है"

Willard साहब ने ग़ज़ल के लिये कहा है -

"The Gazal has its theme a description of beauties of the beloved object, minutely, enumerated, such as the green beared moles, ringlets, sçe, shape and C.k~ as will as his cruelties and indffierences and the pain endured the lover."

ग़ज़ल की उत्पत्ति

"ग़ज़ल का सुमारम्भ ईरान की भूमि पर हुआ, ईरान में फारस नामक एक प्रांत है।

अतः फारस के नाम पर इस देश को फारस और यहाँ की भाषा को फारसी कहा जाने लगा।"7

"ग़ज़ल मूलतः फारसी शब्द है जिसका सामान्य सा अर्थ है "मुहब्बत के जज़्बातो" को व्यक्त करने वाली काव्य विधा।

ऐसा माना जाता है कि ग़ज़ल की उत्पत्ति फारस के लोक-संगीत से हुई है। फारस से ही इसका प्रसार फिर अरब, मिश्र तथा भारत आदि देशों में हुआ।"8

"कालान्तर में ईरान पर अरब शासको का अधिकार हो जाने से फारसी पर अरबी शब्दों का सम्मिश्रण हो गया।

अरबी भाषा में ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ कातना-बुनना होता है।

अरबी साहित्य में प्रेम अवश्य मिलता है, किन्तु ग़ज़ल के नाम से नहीं बल्कि तशबीब अथवा नसीब के नाम से जो वास्तव में कसीदे का ही अंश है। अरबी भाषा में 'कसीदा' काव्य की एक विधा थी जो किसी की प्रशंसा से संबंधित होती थी। तथा तशबीब व नसीब का अर्थ ग़ज़ल के समान ही यौवन और प्रेम की बाते करना होता था।

ग़ज़ल अरबी काव्य का अंश ना बन सकी किन्तु अरबी साहित्यकारों और कवियों ने उसकी एक कल्पना अवश्य की थी। 10वीं शताब्दी में ईरान में 'रौदकी' नामक कवि हुआ जिसने सर्वप्रथम फारसी में ग़ज़ल विधा को जन्म दिया। जिसने ईरान में ग़ज़ल को सम्मान दिलाया। रौदकी की

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग़ज़लें प्रिय-प्रदत्त, विरह जन्य, भावनाओं से ओत-प्रोत है। फारसी में रौदकी से लेकर सादी शीराजी तक ग़ज़ल की विशाल परम्परा मिलती है। रौदकी की ग़ज़लों में अरबी भाषा का सम्मिश्रण था। उस समय लिखी गयी ग़ज़लों की भाषा अरबी-फारसी भाषा की जटिलता का सम्मिश्रण था। किन्तु फिर भी ग़ज़ल शुद्ध भावात्मक व संप्रेषणात्मक अभिव्यक्ति है। प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम जितना अच्छा ग़ज़ल हो सकती है, उतनी कोई अन्य विधा नहीं हो सकती।"9

निःसदेह ग़ज़ल एक आयतित विधा है। इसने अरब से चलकर ईरान होते हुए भारत की यात्रा की है। मध्यकाल में जब ईरानी भारत आए तो अपने साथ ग़ज़ल को भी लाए तथा यहाँ उर्दू-कवियों के हाथों इसका पालन पोषण हुआ। उर्दू व फारसी ग़ज़लों को एक समान माना जाता है किन्तु दोनो में अंतर है। फारसी साहित्य में इश्के हकीकी (पार लौकिक प्रेम) को अत्यधिक महत्व दिया गया है। इसके विपरीत उर्दू ग़ज़ल साहित्य में इश्के मज़ाजी (लौकिक प्रेम) को महत्व दिया गया है।

भारत में ग़ज़ल गायिकी का विकास

"भारत में ग़ज़ल शैली का प्रसार करने में सूफी संतों का बड़ा योगदान रहा है, इन सूफी संतों ने विभिन्न धर्मो तथा पंथों के बीच ऐक्य स्थापित करने का प्रयास किया।

भारत में ग़ज़ल तथा कव्वाली के प्रर्वतन का श्रेय 13वीं शताब्दी के प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती को है, उन्होंने स्वयं फारसी तथा हिन्दी में ग़ज़लें लिखी तथा ग़ज़ल को प्रतिष्ठित करने में खिलजी और तुगलक साम्राज्य के राज कवि अमीर खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

वे राज कवि होने के साथ-साथ अच्छे ग़ज़ल गायक भी थे"।10

अमीर खुसरो को उर्दू , हिन्दी ग़ज़ल के बाबा आदम या आद्य ग़ज़ल कार सम्मान प्राप्त हुआ है।खुसरो ने (ई॰ सं॰ 1253 से 1324) उर्दू छंदो का एवम् शब्दों का तथा हिन्दी छंदो एवम् शब्दों का प्रयोग किया है। सइद नफीज - संपादित "दीवाने-ए-कामिल" अमीर खुसरो में अमीर खुसरो देहलवी की फारसी ग़ज़लों की संख्या 1726 बतलाई गयी है।

खुसरो की भाषा देहलवी थी कवि ने अपना परिचय देते हुए लिखा है कि वह तुर्की हिन्दुस्तानी है। हिंदवी उसकी भाषा है। खुसरो अरबी-फारसी, तुर्की, और हिन्दी के बहुज्ञाता कवि थे। उनकी पहेलियां, मुर्कीयां दोहे, ओर ग़ज़ले प्रसिद्ध है।"11

प्रोफेसर सिराजुद्दीन आजर के संग्रह में सुरक्षित 13वीं हिजरी के प्रारम्भ में लिखी गयी ग़ज़ल को "हिन्दी की प्रथम" ग़ज़ल होने का गौरव प्राप्त हुआ है। इस ग़ज़ल के शोधकर्ता महमूद शीरानी है। समय के साथ-साथ ग़ज़ल गायिकी भारत की एक लोकप्रिय उपशास्त्रीय विधा हो गयी। लोग ग़ज़ल को सुनने लगे, समझने लगे और गुनगुनाने लगे।

चूंकि भारत एक ऐसा देश रहा है जिसमे अति-प्राचीन काल से विभिन्न जातियाँ आती जाती रही है। इन जातियों में से कुछ जातियाँ यही घुल मिल गई और यहीं की होकर रह गई। जब किसी देश में बाहर की जातियों का विलय होता है तो यह निश्चित है कि इस विलय की प्रक्रिया में एक दूसरे की संस्कृति का आदान-प्रदान होता है, जिसके फलस्वरूप एक नई संस्कृति जन्म लेती है। इस प्रकार ग़ज़ल गायकी अरब से यात्रा करते हुए भारत पहुँची। भारत में ग़ज़ल गायिकी का

स्वरूप हर दौर में अलग-प्रकार से रहा जिनमें से कुछ प्रमुख गायको ने इस गायिकी को लोकप्रिय बना दिया जैसे- बेगम अख़्तर, मेहदी हसन, जगजीत सिंह, गुलाम अली इन सभी गायकों की गायिकी के अंदाज ने ग़ज़ल को एक अलग पहचान दिलवायी है, ग़ज़ल एक उपशास्त्रीय विधा होते हुए भी सभी लोग वर्तमान में ग़ज़ल को सुनने, सीखने व गुनगुनाने लगे है।

निष्कर्ष

निःसंदेह ग़ज़ल एक आयतित विधा है। किन्तु भारत में ग़ज़ल की बढती लोकप्रियता इस बात का प्रमाण है कि संगीत की कोई सरहद नहीं होती चाहे वे किसी भी देश, काल, परिस्थिति में जन्मा हो वह सभी प्रकार के बंधन से मुक्त होकर स्वछंद विचरण कर सकता है। ग़ज़ल गायिकी इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। जिस प्रकार यह फारस से यात्रा करते हुए भारत पहुँची यहाँ की एक लोकप्रिय शैली बन गयी, यह संगीत का अद्भुत करिश्मा हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. श.सी. पंराजपे, ग़ज़ल अंक, पृष्ठ 9
2. डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, पृष्ठ 1
3. रूद्र कशिकेश, ग़ज़लिका, पृष्ठ 3
4. अब्बासी नूरनवी, ग़ज़ल एक सफर, पृष्ठ 68
5. फिराक गोरखपूरी, कामरूप, पृष्ठ 1
6. उमेश जोशी, उद्धत भारतीय संगीत का इतिहास, पृष्ठ 269
7. रोहिताश्व अस्थाना, हिन्दी ग़ज़ल उद्भव व विकास, पृष्ठ 9
8. डॉ. श.सी. पंराजपे , ग़ज़ल अंक, पृष्ठ 9
9. रूद्र काशिकेश, ग़ज़लिका, पृष्ठ 3
10. डॉ. श.सी. पंराजपे, ग़ज़ल अंक, वही पृष्ठ 9
11. डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, पृष्ठ-11